Dr.Raman Kumar Thakur

Asstt. Prof. (Guest)Department of Economics,D.B.College, jaynagar.

Class:-B.A. part-2(Hons)

Date:-20-07-2020.

Topic:-वैश्वीकरण की प्रासंगिकता(Significance of Globalisation):-

वैश्वीकरण के पक्ष में तर्क(Arguments in favour of Globalisation):-

आर्थिक उदारीकरण के वर्तमान वातावरण में वैश्वीकरण अत्यंत महत्वपूर्ण अवधारणा के रूप में विकसित हो रहा है भारत सहित अनेक विकासशील देश अपनी अर्थव्यवस्था को संपूर्ण विश्व की अर्थव्यवस्था के साथ एकीकृत करने के सभी संभव प्रयास कर रहे हैं जनवरी 1995 में विश्व व्यापार संगठन(WTO) की स्थापना में इस अवधारणा को और भी अधिक महत्वपूर्ण बना दिया है । इसके औचित्तय को निम्न प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है:-

1) कार्य कुशलता में वृद्धि(Improvement in Efficiancy):-वैश्वीकरण की प्रक्रिया के अंतर्गत व्यापार अवरोधों को न्यूनतम करने का प्रयास किया जाता है ताकि सामग्री श्रम एवं तकनीक का स्वतंत्र प्रवाह संभव हो सके इससे सामग्री,श्रम एवं पूंजी का अधिक कुशलता के साथ प्रयोग कर पाना संभव होता है।

2). श्रम पूंजी एवं तकनीक का स्वतंत्र प्रवाह(Free flow of Labour Capital and Techniques) :- वैश्वीकरण का मुख्य आधार व्यापार अवरोधको को न्यूनतम करके विभिन्न राष्ट्रों के मध्य श्रम पूंजी एवं

तकनीक के स्वतंत्र प्रवाह को प्रोत्साहित करना है इससे विभिन्न देश एक दूसरे के संसाधनों का उपयोग करके अपने विकास के मार्ग को प्रशस्त कर सकते हैं.

3) वस्तुओं और सेवाओं का स्वतंत्र प्रवाह(Free follow Goods and services):- वैश्वीकरण के अंतर्गत आर्थिक एवं व्यापारीक अवरोधको को न्यूनतम करके वस्तुओं एवं सेवाओं के स्वतंत्र प्रवाह का वातावरण बनाया जाता है ताकि सभी देश एक दूसरे के द्वारा उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं का उपयोग कर सकें तथा अपने आर्थिक एवं सामाजिक जीवन स्तर में सुधार कर सके।

4). स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का विकास (Growth of Healthy Competition):- वैश्वीकरण की प्रक्रिया के अंतर्गत व्यापार अवरोधोंको को न्यूनतम करके आयात एवं निर्यात को प्रोत्साहित किया जाता है . सभी देश दूसरे देश की क्षमता, योग्यता एवं विकास का लाभ उठाकर अधिक से अधिक प्रगति प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। इससे संपूर्ण विश्व में स्वास्थ्य प्रतिस्पर्धा का विकास होता है।

5) पूजी उत्पाद अनुपात में कमी(Reduction in Capital Out put Ratio):- वस्तुओं सेवाओं, पूंजी एवं तकनीकी स्वतंत्र परवाह से यह संभव हो पाता है कि प्रत्येक राष्ट्र न्यूनतम लागत पर अधिकतम एवं सर्वोत्तम साधन जुटा सके और न्यूनतम लागत पर अधिकतम उत्पादन कर सके इससे पूंजी उत्पाद अनुपात में कमी लाना संभव हो पाता है।

6) उपयुक्त उत्पादन एवं व्यापार ढांचे का चुनाव (Selection of suitable production &Trading Pattern):-वैश्वीकरण के अंतर्गत प्रत्येक

देश अपनी आर्थिक आवश्यकताओं एवं उपलब्ध संसाधनों के अनुरूप उपयुक्त उत्पादन एवं व्यापार ढांचे का चुनाव कर पाता है भारत जैसे विकासशील देश में जहां पूंजी की कमी एवं श्रम की प्रधानता है श्रम प्रधान उत्पादन तकनीक अपनाई जा सकती है.

7). समग्र आर्थिक विकास में सहायक(Helpful in comprehensive Economic Development):-वैश्वीकरण की नीतियों के परिणाम स्वरूप विकासशील देशों की स्पर्धात्मकता शक्ति में वृद्धि होगी तथा वे तीव्र आर्थिक विकास कर पाने में समर्थ होंगे . वैश्वीकरण को ऐसी प्रेरक शक्ति की संज्ञा दी जा सकती है जिसके आधार पर प्रत्येक देश का तीव्र आर्थिक एवं सामाजिक विकास संभव हो पाएगा.

8). रोजगार अवसरों का विकास(Increase in Employment opportunities):- वैश्वीकरण समस्त संसार को सार्वभौमिक ग्राम के रूप में परिवर्तित करने की प्रक्रिया है. इसके अंतर्गत व्यापार अवरोधको को न्यूनतम करके तीव्र आर्थिक विकास के प्रयास किए जाते हैं। देश में वस्तुओं सेवाओं श्रम पूंजी एवं तकनीक के प्रवाह में वृद्धि होती है. इससे निश्चित रूप से रोजगार के अवसरों में वृद्धि करने में सहायता मिलती है ।